3:10-17

“विश्वास की रक्षा कर”

अब 3:10-17, में पौलुस इस विषय की ओर मुड़ा कि तीमुथियुस को आने वाले कठिन समयों का सामना करने के लिए क्या करना चाहिए। यह मात्र तूफ़ान के निकल जाने की प्रतीक्षा करना नहीं था क्योंकि अभक्ति का तूफ़ान बने रहने के लिए था (और अभी भी है)।

यह आयतें एक ही परिच्छेद में हैं, परन्तु यह खण्ड सरलता से दो भागों में विभाजित हो जाता है। प्रत्येक भाग का आरंभ यूनानी शब्दों σὺ δὲ (*सू दे),* जिनका अनुवाद “परन्तु तू” आयत 10 में और “परन्तु तू” आयत 14 में किया गया है। प्रत्येक खण्ड तैयारी का एक अपरिहार्य पक्ष सुझाता है, यदि किसी को बुरे समयों के लिए तैयार रहना है: अच्छे उदाहरणों पर (3:10-13) और परमेश्वर के वचन पर (3:14-17) ध्यान केंद्रित रखो।

“भक्त लोगों पर ध्यान केंद्रित रखो” (3:10-13)

10परन्तु तू ने उपदेश, चालचलन, मनसा, विश्वास, सहनशीलता, प्रेम, धीरज, और सताए जाने, और दु:ख उठाने में मेरा साथ दिया; 11और ऐसे दु:खों में भी जो अन्ताकिया और इकुनियुम और लुस्त्रा में मुझ पर पड़े थे, और अन्य दु:खों में भी जो मैं ने उठाए हैं; परन्तु प्रभु ने मुझे उन सबसे छुड़ा लिया। 12पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएँगे; 13परन्तु दुष्ट और बहकानेवाले धोखा देते हुए और धोखा खाते हुए, बिगड़ते चले जाएँगे।

आयत 10. 3:6, 8 में पौलुस ने झूठे शिक्षकों का भांडाफोड़ किया था, भ्रष्ट बुद्धि के लोग जो सत्य का विरोध करते थे और औरों को भी भटका देते थे। आयत 10 का आरंभ एक तुलना के साथ होता है: **परन्तु तू** - जिसका शब्दार्थ है “परन्तु तू” (*सू दे*), जिसका अनुवाद “परन्तु तेरे संबंध में”[1] किया जा सकता है। जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने लिखा, “समकालिक नैतिकता के पतन, धार्मिकता के खोखले दिखावे और झूठी शिक्षाओं के प्रसार की तुलना में तीमुथियुस को भिन्न होने के लिए कहा गया, और यदि आवश्यक हो तो अकेला भी खड़ा रहे।”[2] हम सबको के लिए भी यही चुनौती दी गई है (रोमियों 12:1, 2)।

पौलुस ने तीमुथियुस से कहा **तू ने उपदेश, चालचलन, मनसा, विश्वास, सहनशीलता, प्रेम, धीरज, और सताए जाने, और दु:ख उठाने में मेरा साथ दिया।** "साथ दिया" παρακολουθέω *(पैराकोलोउथियो)* से है, और उसका अभिप्राय निकटता से अनुसरण करने से होता है।[3] अंग्रेज़ी के शब्द "अनुसरण" के समान *पैराकोलोउथियो* को भी दो प्रकार से प्रयोग किया जा सकता है।[4] व्यक्ति मानसिक अनुसरण कर सकता है, जैसे कि "मैं तुम्हारी विवेक बुद्धि का अनुसरण कर रहा हूँ," या किसी के पीछे-पीछे, उसके पद-चिन्हों पर चलने के द्वारा उसका शारीरिक अनुसरण किया जा सकता है। तीमुथियुस ने पौलुस के विषय दोनों ही प्रकार से अनुसरण किया। पौलुस के इतना निकट और कोई नहीं था जितना कि तीमुथियुस, जिसने पन्द्रह वर्ष तक उसके साथ यात्राएं की थीं।

क्योंकि आयत 10 का निहितार्थ है कि पौलुस की शिक्षाएँ और व्यवहार अनुसरण करने के योग्य था, इसलिए उस पर बड़बोला होने का आरोप लगाया गया है। वॉल्टर एल. लेफेल्ड इस निष्कर्ष से असहमत हैं: "वह अपनी बड़ाई नहीं कर रहा है, परन्तु दिखा रहा है कि उसके जीवन-मूल्य कहाँ पर हैं, मूल्य जो वैकल्पिक या तुलनात्मक नहीं हैं परन्तु प्रभु के सेवक के जीवन में परिशुद्ध महत्व के हैं।"[5] इस आयत को एक वृद्ध व्यक्ति के द्वारा किसी अपने से कम आयु के व्यक्ति के साथ जो उसने जीवन से सीखा है उसे साझा करने के समान देखा जा सकता है। इसे आयत 2 से 5 में दी गई बुराइयों की सूची की विपरीत सूची सोचा जा सकता है। इसे एक ऐसी सूची के समान जिसके विषय मसीहियों (विशेषकर प्रचारकों) को सचेत रहना चाहिए के रूप में भी प्रयोग किया जा सकता है।

सूची का आरंभ "मेरी शिक्षाओं"[6] के साथ होता है। जब पौलुस ने उसका विवरण दिया जिसके लिए "संपूर्ण पवित्र-शास्त्र" लाभप्रद है, उसने सबसे पहले "उपदेश" का नाम लिया (3:16)। "उपदेश" διδασκαλία *(डईडेसकालिया)* से है, जिसका अनुवाद "सिद्धान्त" किया जा सकता है (देखें KJV)। पौलुस की प्राथमिक चिंताओं में से एक थी सही सिद्धांतों[7] की आवश्यकता। यदि किसी के सिद्धान्त गलत हैं, तो फिर इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता कि और क्या सही है।

परन्तु केवल सही सिद्धान्त अपने आप में निष्फल और मृत है, इसलिए पौलुस ने उसके साथ "चालचलन" (ἀγωγή, *अगोगे)* या "जीवन शैली" (NIV) को जोड़ा। पौलुस ने तीमुथियुस को 1 तीमुथियुस 4:16 में निर्देश दिया कि वह अपने जीवन और उपदेश दोनों पर "स्थिर बने रहे," और वह स्वयं भी यही करने का ध्यान रखता था।

पौलुस की सूची में अगला था "मनसा" या "जीवन का उद्देश्य" (NRSV)। "मनसा" πρόθεσις *(प्रोथीसिस)* से है, जो कि "वह जिसकी योजना पहले से बनाई गई है"[8] से संबंधित है। अनेकों व्यक्ति अपना जीवन बिना किसी उद्देश्य के, या किसी छिछले उद्देश्य के साथ व्यतीत करते रहते हैं: आनन्द मनाएं, धन कमाएँ, या लोकप्रिय हो जाएँ। पौलुस के जीवन का उद्देश्य अधिक गंभीर था। उसने 1:9 में परमेश्वर के उद्देश्य के लिए *प्रोथीसिस* का प्रयोग किया। उसका उद्देश्य था परमेश्वर के उद्देश्य के अनुरूप जीवन व्यतीत करे।

इससे अगले तीन विषय मसीही जीवन के लिए पौलुस के "तीन महान गुणों" का प्रस्तुतिकरण प्रदान करते हैं। अधिक सामान्य विधि थी कि उसके द्वारा इन्हें "विश्वास, आशा, और प्रेम" कहकर सूचीबद्ध किया जाए; परन्तु यहाँ उसने "आशा" के स्थान पर "सहनशीलता" का प्रयोग किया। "सहनशीलता" μακροθυμία *(मकरोथूमिया)* से है, जिसका अर्थ होता है "लंबे-संयम वाला," जो कि "चिड़चिड़ा/अधीर" का विलोम है।[9] इस सदगुण का अभिप्राय उनके साथ धीरजवंत रहना है जो हमें परेशान करने के प्रयास करते हैं।

"विश्वास" (*πίστις*, *पिस्टीस)* पौलुस की विश्वासयोग्यता हो सकती थी, परन्तु इस संदर्भ में संभवतः यह परमेश्वर में उसका व्यक्तिगत विश्वास और भरोसा है। "प्रेम" (*ἀγάπη*, *अगापे)* में परमेश्वर और मनुष्य, दोनों के लिए प्रेम सम्मिलित है। औरों के प्रति प्रेम के विषय, विलियम बार्कले ने लिखा कि प्रेम वह रवैया है जो "उस सब कुछ को सहन करता है जो मनुष्य कर सकते हैं और क्रोध या कड़वाहट को होने नहीं देता, तथा जो उनकी सर्वोच्च भलाई के अतिरिक्त और किसी बात का खोजी नहीं होता है।"[10]

सूची में इसके बाद है "धीरज" जिसका "सहनशीलता" के साथ निकट संबंध है। "धीरज" (*ὑπομονή*, *ह्यूपोमोने) परिस्थितियों* के साथ सहनशील होना है,[11] विशेषकर कठिन परिस्थितियाँ जैसी के आयत 1 से लेकर 5 में बताई गई हैं।

आयात 11. पौलुस द्वारा परेशानियों के समय में सहनशीलता का उल्लेख करने से उसे कुछ विशिष्ट परीक्षाओं का स्मरण हो आया, जिनसे तीमुथियुस अवगत था। इसलिए पौलुस ने जोड़ा, **और ऐसे दुःखों** [διωγμός, *डायोगमोस*[12]; *πάθημα*, *पथेमा*[13]] **में भी जो अन्ताकिया** [पिसीदिया के] **और इकुनियुम और लुस्त्रा में मुझ पर पड़े थे**। जिन तीन शहरों का उल्लेख किया गया वे उस क्षेत्र के थे जहाँ तीमुथियुस का पालन-पोषण हुआ था; संभवतः उसका घर लुस्त्रा में था। पौलुस को अन्ताकिया से भगाया गया था; उसे शारीरिक हानि की धमकी के कारण इकुनियुम से भागना पड़ा था; और लुस्त्रा में उसे पत्थरवाह करके मरा समझ कर छोड़ दिया गया था (प्रेरितों 13:50; 14:5, 6, 19)। ये सभी घटनाएँ तीमुथियुस के पौलुस के संगी यात्री बनने से पहले घटित हुई थीं, परन्तु निःसंदेह उसने मसीहियों को इन घटनाओं के विषय चर्चा करते हुए सुना होगा और हो सकता है कि लुस्त्रा में क्रूरता से किए गए पत्थरवाह को देखा भी होगा।

पौलुस ने कहा, **दुःखों में भी जो मैं ने उठाए हैं**। "उठाए हैं" (ὑποφέρω, *ह्यूपोफेरो*, "सहन किए") पिछली आयत के "धीरज" (*ह्यूपोमोने*, "सहन करते रहना") के समान है। पौलुस इन दुखों को कैसे सहन कर सका? उसने कहा, **परन्तु प्रभु ने मुझे उन सबसे छुड़ा लिया!** (देखें भजन 34:18, 19)। "छुड़ा लिया" ῥύομαι *(रुहोमाई)* से है, जिसका अर्थ होता है "खतरे से बचा लेना, बचाना, . . . छुड़ाना।"[14] पौलुस के ईश्वरीय "छुटकारे" सदा ही बाह्य नहीं थे। कभी-कभी तो पौलुस को खतरों से बचाया गया था (देखें प्रेरितों 16:25, 26) परन्तु हर बार नहीं। लुस्त्रा में उसे पत्थरवाह किया गया, और अब वह मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था।[15] बहुधा "बचाया जाना" भीतरी होता था। प्रभु पौलुस के पास खड़ा

हुआ (2 तीमु. 4:17) और उसे उसकी परीक्षाओं को सहने की सामर्थ्य भी दी (2 कुरि. 12:9)। परमेश्वर ने उसे अंतर्दृष्टि भी दी कि वह समझ सके कि उसकी परीक्षाएं उस प्रगट होने वाली महिमा के साथ तुलना करने के योग्य भी नहीं थीं (रोमियों 8:18)।

आयत 12. पौलुस अपने अनुभवों से मसीहियों के सामान्यतः अनुभवों की ओर मुड़ा: **पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएँगे**। "भक्ति के साथ जीवन" उनके साथ तुलना है जो केवल "भक्ति का भेष तो धरेंगे" (3:5)। "सताए जाएँगे" διώκω *(डीओको)* से है, जिसका अर्थ होता है "पीछा करना।"[16] इस आयत में यह मसीह के अनुयायियों के "जंगली जानवरों के समान शिकार" किए जाने का चित्रण करता है।[17] यीशु ने अपने शिष्यों से कहा,

> यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो तुम जानते हो, कि उसने तुम से पहिले मुझ से भी बैर रखा। यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रीति रखता, परन्तु इस कारण कि तुम संसार के नहीं, . . . संसार तुम से बैर रखता है। . . . यदि उन्होंने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएंगे (यूहन्ना 15:18-20)।

संसार मसीहियों से बैर रखता है क्योंकि भक्ति, अभक्ति का भांडाफोड कर देती है, जैसे कि तेज ज्योति दोषों को प्रगट कर देती है। संसार का सताव शारीरिक हो सकता है; या वह इससे कुछ सूक्ष्म, निन्दा और तिरस्कार के रूप में हो सकता है। चाहे जैसा भी हो, सताव तो आएगा ही। जब पौलुस 3:11 में उल्लेखित शहरों में नए मसीहियों से पुनः मिलने गया, तो उसने उन से कहा, "हमें बड़े क्लेश उठा कर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा" (प्रेरितों 14:21, 22)।

आयत 13. पौलुस ने ध्यान भक्तों से अभक्तों की ओर किया: **परन्तु दुष्ट**[18] **और बहकानेवाले धोखा देते हुए और धोखा खाते हुए, बिगड़ते चले जाएँगे।** "दुष्ट" πονηρός *(पोनेरोस)* से है, जिसका अर्थ होता है "दुष्ट, पापी, बुरे, नीच, बेकार, दुराचारी, पतित।"[19] "बहकानेवाले" के लिए शब्द है (γόης, *गोएस*) जो कि मूल शब्द γοάω (*गोआओ,* "विलाप") से है।[20] यह उस चीखने के लिए है जिसके साथ माया-मन्त्रों का आलाप होता था। *गोएस* का प्रयोग तांत्रिक या जादूगर के विषय बात करने के लिए किया जाता था। परन्तु बाइबल में, यह सामान्यतः "ठग" या "धोखेबाज़" के अर्थ में प्रयोग किया जाता है।[21] पौलुस चालाक और धूर्त लोगों के विषय बात कर रहा था, जिन्हें NEB "कपटी" कहती है। उसने कहा कि ये लोग "बिगड़ते चले जाएँगे।" "चले जाना" (προκόπτω, *प्रोकॉपटो)* का अर्थ है "बढ़ना" या "प्रगति करना।"[22] पौलुस ने इस शब्द को 2 तीमुथियुस 2:16 में *पीछे* की ओर प्रगति करने के लिए प्रयोग किया। उसने उसी प्रकार के व्यंग्य को यहाँ भी प्रयोग किया। ये पापी व्यक्ति उल्टी दिशा में "प्रगति" कर रहे थे: "बिगड़ते जा रहे थे।"[23]

साथ ही वे "धोखा देते हुए और धोखा खाते हुए" भी बढ़ रहे थे। "धोखा देते"

और "धोखा खाते" एक ही शब्द: πλανάω *(प्लानाओ)* के दो रूप हैं। सक्रिय रूप में *प्लानाओ* का अर्थ है किसी को भटका देना - अर्थात उसे गलत मार्ग पर डाल देना। निष्क्रिय रूप में इसका अर्थ है स्वयं गलत मार्ग पर डाल दिए जाना।[24] फिलिप्स अनुवाद कहता है दुष्ट, धोखेबाज़ पुरुष "औरों को भ्रम में डाल रहे थे और स्वयं भी भ्रम में पड़ रहे थे।"

यह सामान्य है कि जो औरों को भ्रम में डालने का व्यवहार करता रहता है, वह स्वयं भी, क्या वास्तविक है और क्या नहीं, इसकी पहचान खोने लगता है। वह समझता है कि वह चतुर है, परन्तु यह नहीं पहचान पाता की वह जो कर रहा है वह मूर्खता की पराकाष्ठा है। वह सोचता है कि वह प्रगति कर रहा है, परन्तु वास्तव में वह केवल "बिगड़ता जा रहा है।" वह अपने आप को यह भ्रम भी दे सकता है कि जो वह कर रहा है वह सही है और उससे परमेश्वर प्रसन्न होता है (देखें मत्ती 7:21-23)।

"परमेश्वर के वचन पर ध्यान केंद्रित करें" (3:14-17)

14पर तू उन बातों पर जो तू ने सीखीं हैं और विश्वास किया है, यह जानकर दृढ़ बना रह कि तू ने उन्हें किन लोगों से सीखा है, 15और बचपन से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिये बुद्धिमान बना सकता है। 16सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है, 17ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।

2:15 में हम सब को प्रोत्साहित किया गया है कि हम वे भले कार्यकर्ता बनें जो अपने औज़ार "सत्य का वचन" का कुशलता से प्रयोग कर सकें। 3:14-17 में फिर से इसी पर बल दिया गया है कि जिस औज़ार की हमें आवश्यकता है वह बाइबल है। हम पवित्र-शास्त्र के अध्ययन और उसे अपने जीवन में लागू करने के महत्व पर जितना भी ज़ोर दें वह कम है। हम चाहे जहाँ भी हों, और चाहे जो भी करते हों, परमेश्वर का वचन हमारा सदा सहायक हो सकता है।

आयतें 14, 15. आयत 10 के समान, आयत 14 का आरंभ भी σὺ δὲ (*सू दे)* के साथ होता है, जिसका अनुवाद "परन्तु तू" (ESV) किया जा सकता है। "परन्तु दुष्ट और बहकानेवाले धोखा देते हुए और धोखा खाते हुए, बिगड़ते चले जाएँगे" (3:13), परन्तु तीमुथियुस को वैसा नहीं होना था। पौलुस ने उसे आदेश दिया, **पर तू उन बातों पर जो तू ने सीखीं** [μανθάνω, *मनथनो*[25]] **हैं और विश्वास किया है, यह जानकर दृढ़ बना रह**। इस परिच्छेद में केवल यही अनिवार्य सूचक है - और यही पौलुस का बल का प्रमुख विषय है।

तीमुथियुस ने जो कुछ बचपन में "सीखा" था वह "पवित्र-शास्त्र" में से आया था (3:15, 16)। आज का रुझान उसकी ओर है जो कुछ भी नया हो, अनूठा हो,

तथा भिन्न हो (देखें 4:3, 4)। "पारंपरिक" को "पुरानी विचारधारा, बीते समय का, और इसलिए व्यर्थ" का पर्याय समझा जाता है। किन्तु तीमुथियुस को उसे जो उसने पिछले समय में सीखा था, त्याग नहीं देना था। वरन उसे उनमें "दृढ़ बने रहना" था (μένω, *मेनो),* किसी आगन्तुक के समान नहीं वरन स्थायी निवासी के समान।[26]

तीमुथियुस ने न केवल परमेश्वर के वचन के सत्यों को सीखा था वरन उन पर "विश्वास भी किया" था। जिस यूनानी शब्द का अनुवाद "विश्वास भी किया" (πιστόω, *पिसतू)* हुआ है उसका अर्थ है "किसी वस्तु के प्रति निश्चित होना, उसकी विश्वासयोग्यता के कारण, उसपर भरोसे के कारण।"[27] तीमुथियुस ने प्रेरणा से प्राप्त हुई शिक्षाओं को केवल सुना या उन पर विचार ही नहीं किया था, वरन उसने दृढ़ता से विश्वास भी किया था कि वे सत्य हैं। "उसने उन्हें अपना लिया था, उनपर विश्वास किया था, उन्हें आत्मसात कर लिया था, उनके अनुसार जीवन व्यतीत करता था।"[28]

तीमुथियुस को इसी मार्ग पर चलते रहना था। ऐसा करने के लिए उसे प्रोत्साहित करने के लिए, पौलुस ने फिर से बीते समय की स्मृतियों को उभारा: **यह जानकर दृढ़ बना रह कि तू ने उन्हें किन लोगों से सीखा है**। कुछ इस बात पर प्रश्न उठाते हैं कि "किन" बहुवचन है कि नहीं। आरंभिक यूनानी लेखों में बहुवचन है, बाद के लेखों में एकवचन है (संभवतः तीमुथियुस को सिखाने में पौलुस की भूमिका पर बल देने के लिए[29])। वर्तमान यूनानी लेख[30] में बहुवचन है, जिससे इसमें तीमुथियुस की माँ और नानी भी सम्मिलित हो जाएँगी। यह कि पौलुस के विचारों में यूनीके और लोइस भी थे, इससे अगले वाक्य: **और बचपन से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है** से देखा जा सकता है।

"पवित्र-शास्त्र" ἱερός (*हेइरोस,* "पवित्र" या "पावन") और γράμμα (*ग्राम्मा,* "वह जो लिखा गया")[31] से है। इस लेख में *ग्राम्मा* "लिखित अक्षरों का एक समूह है जो कोई लेख या दस्तावेज़ का भाग बनाता है।"[32] यहाँ 3:15 के *ग्राम्मा* में केवल पुराने नियम की पुस्तकें ही सम्मिलित हैं, क्योंकि तीमुथियुस के बचपन के समय में केवल वही "पवित्र-शास्त्र" उपलब्ध थे।

"बचपन" βρέφος *(ब्रेहोस)* से है, जिसका अभिप्राय एक बहुत छोटा बच्चा होता है।[33] यहूदी माता-पिता अपने बच्चों को व्यवस्था के बारे में शिक्षा देना अपना पावन दायित्व समझते थे (व्यव. 4:9; 6:7; 11:19)। "उनका दावा था कि उनके बच्चे व्यवस्था को अपने लंगोट के दिनों से सीखते थे और माँ के दूध के साथ पीते थे।"[34] कुछ यहूदी सोचते थे कि उन्हें अपने बच्चों को 5 वर्ष की आयु से सिखाना आरंभ कर देना चाहिए,[35] परन्तु प्रत्यक्षतः यूनीके और लोइस ने इससे भी बहुत पहले आरंभ कर दिया प्रतीत होता है।[36] हम कल्पना कर सकते हैं कि तीमुथियुस उनकी गोदी में बैठा हुआ होगा, और वे उसे पुराने नियम की उत्साहवर्धक और प्रभावित करने वाली कहानियाँ सुना रही होंगी।[37] संभवतः ऐसा कोई समय नहीं रहा होगा जब तीमुथियुस के घर में पवित्र-शास्त्र की चर्चा और प्रकटीकरण न होता हो।

ग्राम्मा का अर्थ केवल अक्षर भी हो सकता है, इसलिए कुछ यह सुझाव देते हैं कि तीमुथियुस ने इब्रानी वर्णमाला भी सीखी होगी और पुराने नियम से पढ़ना भी सीखा होगा। समय के साथ बहुत से लोगों ने बाइबल से ही पढ़ना सीख लिया है।

पवित्र-शास्त्र को जानना क्यों महत्वपूर्ण है? पौलुस का उत्तर यह है: क्योंकि वह **तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिये बुद्धिमान बना सकता है**। "बना सकता है" δύναμαι *(दूनामाई)* से है, जो δύναμις (*दूनामिस*, "सामर्थ्य") का क्रिया रूप है। झूठे शिक्षकों की "अशुद्ध बकवाद" के विपरीत (2:16), पवित्र-शास्त्र में *सामर्थ्य* है, "बुद्धिमान बनाने" (σοφίζω, *सोफिज़ो*[38]) की सामर्थ्य। यह "संसार का ज्ञान नहीं" (1 कुरि. 1:20; देखें याकूब 3:15) है। यह मनुष्य के दर्शन के अध्ययन से नहीं आता है, वरन परमेश्वर के वचन के गंभीर प्रयोग के द्वारा आता है (देखें नीति. 23:23)। इस बुद्धिमानी से ही मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता, "उद्धार प्राप्त करने," की पूर्ति होती है।

क्योंकि आयत 15 का पवित्र-शास्त्र पुराने नियम के लेख हैं, इसलिए हमें यह बलपूर्वक कहने की आवश्यकता है कि पुराने नियम का ज्ञान रखना अपने आप में स्वतः ही उद्धार प्रदान नहीं करता है। अविश्वासी यहूदी अपने आप में इस तर्क का पर्याप्त प्रमाण हैं। इसलिए हमें पौलुस के अगले वाक्यांश **जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने**, की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। हमें उद्धार केवल मसीह और केवल उस में ही मिलता है, जब हम उस पर विश्वास लाते हैं, उस पर भरोसा करते हैं और उसकी इच्छा को पूरा करते हैं। पुराने नियम का मुख्य उद्देश्य लोगों को मसीह तक लाना था (गला. 3:24, 25)। यीशु ने कहा कि पुराने नियम के लेख उन्हीं के विषय में बताते हैं (लूका 24:44-47)। नए नियम के प्रचारकों और लेखकों ने मसीह में विश्वास लाने के लिए बारम्बार पुराने नियम के हवाले दिए (देखें प्रेरितों 2:14-40; 26:22, 23)। यीशु में तीमुथियुस के विश्वास को दृढ़ करने के लिए, पौलुस ने पुराने नियम के उसके ज्ञान पर निर्माण किया।

आयतें 16, 17. "पवित्र-शास्त्र" के उल्लेख ने पौलुस को "बाइबल में बाइबल के बारे में दिए गए सबसे प्रबल वाक्य"[39] को लिखने के लिए उकसाया। यह खण्ड परमेश्वर के वचन की महत्वता को बताता है: **सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।**

पवित्र-शास्त्र "लेख" (γραφή, *ग्राफे)* के लिए एक पारिभाषिक शब्द है, परन्तु नए नियम में इसका प्रयोग केवल "पवित्र वचनों" के लिए होता है।[40] "संपूर्ण" *πᾶς (पास)* से है, जिसका अर्थ "संपूर्ण" या "प्रत्येक" हो सकता है।[41] कुछ इन दोनों परिभाषाओं में भिन्नता करते हैं, वे कहते हैं "संपूर्ण पवित्र-शास्त्र" का तात्पर्य बाइबल का उसकी पूर्णता में हो सकता है जबकि "प्रत्येक पवित्र-शास्त्र" उसके भागों के लिए हो सकता है। इस भिन्नता का कोई महत्व नहीं है: "यदि

'प्रत्येक पवित्र-शास्त्र' प्रेरणा द्वारा है, तो 'संपूर्ण पवित्र-शास्त्र' भी प्रेरणा से ही होगा।"[42]

"परमेश्वर की प्रेरणा से" θεόπνευστος *(थियोन्यूसटॉस)* से है, जो θεός (*थियोस*, "परमेश्वर") और πνέω (*नियो*, "श्वास बाहर निकालना") के योग से बनता है। इसका अधिक शाब्दिक अर्थ होगा "परमेश्वर की श्वास द्वारा" (NIV) या "परमेश्वर के श्वास बाहर निकालने के द्वारा" (ESV)।[43] कुछ सोचते हैं कि यह चित्रण मनुष्य की सृष्टि से लिया गया है, जब परमेश्वर ने "उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम जीवित प्राणी बन गया" (उत्पत्ति 2:7)। परमेश्वर ने वचन में "श्वास फूंकी," और वह "जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा" (इब्रा. 4:12) बन गया। अन्य, श्वास बाहर फूंकने (जैसे किसी बहुत ठंडी प्रातः श्वास से बादल सा फूंकते हैं), के साधारण चित्रण को पसन्द करते हैं। डेल हार्टमैन ने बाइबल को "परमेश्वर की छपी हुई श्वास" कहा ।[44] चित्रण चाहे जैसा भी हो, वाक्याँश परमेश्वर की सृष्टि करने की गतिविधि को व्यक्त करता है, और अचूक निश्चित शब्दों में पवित्र-शास्त्र के ईश्वरीय होने की घोषणा करता है।

प्रेरणा का ईश्वरीय स्त्रोत पवित्र-आत्मा था। जब दाऊद के एक वाक्य का हवाला दिया गया, तो यह ध्यान किया गया कि उसे कहते समय वह "आत्मा में था" (मरकुस 12:36)। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि वह उनके लिए अपने पवित्र-आत्मा को भेजेगा जो उन्हें "सब सत्य का मार्ग बताएगा" (यूहन्ना 16:13; देखें 14:26)। पतरस ने कहा कि "भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जा कर परमेश्वर की ओर से बोलते थे" (2 पतरस 1:20, 21)।

पवित्र-शास्त्र प्रेरणा पाए हुए इसलिए नहीं हैं क्योंकि किसी कलीसियाई सभा ने घोषणा की, कि वे हैं। वरन वे प्रेरणा पाए हुए इसलिए हैं क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें वैसा बनाया है। ऐसा अन्य कोई भी दस्तावेज़ नहीं है जिसे "परमेश्वर की प्रेरणा से" की श्रेणी में रखा जा सके। जे. डब्लू. रॉबर्ट्स ने लिखा,

> यहूदी एपोक्रिफा और सूडोएपोक्रिफा, और कलीसिया के आरंभिक पूर्वजों के लेख . . . पवित्र-शास्त्र की श्रेणी में नहीं आते हैं . . . ।
>
> [इसके अतिरिक्त,] पवित्र-शास्त्र में "अंतिम-दिनों के भविष्यद्वक्ताओं" और प्रकाशनों की शिक्षा के लिए कोई स्थान नहीं है। भविष्य के प्रकाशनों, पवित्र-शास्त्र, और पवित्रशास्त्र की "कुंजियों" के पूर्वाग्रह केवल झूठे भविष्यवक्ताओं और भ्रमित करने वाले शिक्षकों के रूप में है।[45]

यह चाहे जितना भी असंभाव्य लगे, किन्तु कुछ आयत 16 का प्रयोग यह सुझाव देने के लिए करते हैं कि *संपूर्ण* बाइबल प्रेरणा से नहीं है। उनका सुझाव है कि क्रिया "है" को हटा देना चाहिए, जिससे इस आयत को कुछ इस प्रकार पढ़ा जाएगा: "जो पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से है वह शिक्षा के लिए लाभप्रद है . . . ।" उनकी इसके विषय यह व्याख्या है कि केवल वही पवित्रशास्त्र लाभप्रद है जो परमेश्वर के द्वारा प्रेरणा से है, जिसका फिर निष्कर्ष है कि कुछ पवित्रशास्त्र

परमेश्वर की प्रेरणा से *नहीं* है। वे इस निष्कर्ष पर यह जानते हुए भी पहुँचते हैं कि "प्रेरणा रहित पवित्र-शास्त्र" बाइबल के लिए अनजाना है। शब्द "पवित्र-शास्त्र नए नियम में लगभग पचास बार आया है, और सदैव ही 'पवित्र-शास्त्र' के संज्ञा रूप में एवं *पवित्र अर्थ के साथ*"[46] आयत 16 को पढ़ने की सबसे स्वाभाविक विधि है "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र [उसकी सम्पूर्णता में[47]] परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है।"

जैसा पहले ध्यान किया गया है, आयत 15 में वाक्याँश "पवित्रशास्त्र" केवल पुराने नियम के पवित्रशास्त्र को सम्मिलित करता है, क्योंकि जब तीमुथियुस बच्चा था तब प्रेरणा से प्राप्त उपलब्ध लेख केवल वे ही थे। यह भी सत्य है कि आरंभिक मसीहियों ने जब शब्द "पवित्रशास्त्र" (3:16) पढ़ा, तब संभवतः उनका पहला विचार पुराने नियम के लेखों के विषय रहा होगा। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि यह खण्ड केवल पुराने नियम पर ही लागू होता है। 2 पतरस 3:15, 16 में पतरस ने पौलुस के लेखों के विषय कहा और उन्हें "पवित्र शास्त्र की अन्य बातों" के साथ रख दिया। 1 तीमुथियुस 5:18 में पौलुस ने मूसा से लिए गए एक हवाले और लूका से लिए गए एक अन्य हवाले को "पवित्रशास्त्र" कहा।[48] जैसे कि पुराने नियम में "भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जा कर परमेश्वर की ओर से बोलते थे" (2 पतरस 1:21), वैसे ही नए नियम में भी पवित्र-आत्मा के द्वारा मार्गदर्शन पाए हुए जन स्वर्गीय सत्यों को बोलते और लिखते थे (यूहन्ना 14:26; 16:13) जब हम कहते हैं कि "संपूर्ण पवित्रशास्त्र" "उसकी सम्पूर्णता में परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है" तब हमारे मनों में दोनों पुराना और नया नियम होते हैं।

बाइबल के प्रति हमारे रवैये से बढ़कर और कुछ भी नहीं है जो उसके प्रति हमारी समझ को प्रभावित करता है। हमें अपने संपूर्ण मन से स्वीकार करना चाहिए कि बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से है और आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी पौलुस के समय में थी।

क्योंकि "संपूर्ण पवित्रशास्त्र" प्रेरणा के द्वारा है, वह लाभदायक (ὠφέλιμος, *ओफेलिमोस)* या "उपयोगी" है।[49] यह झूठे शिक्षकों की, बिना लाभ वाली शिक्षाओं और कल्पनाओं की तीव्र तुलना में है।[50] पौलुस के अनुसार, "संपूर्ण पवित्रशास्त्र" हमारे उद्देश्यों के लिए लाभदायक है।

सबसे पहला है "उपदेश" (διδασκαλία, *डाईडसकालिया),* जो एक बार फिर सूची के आरम्भ में है।[51] बाइबल में सब के लिए उपयुक्त उपदेश (शिक्षा) हैं: मसीह में बालकों: के लिए "दूध" और "सयानों" के लिए "अन्न" (1 कुरि. 3:1, 2; इब्रा. 5:12-14)। मनुष्यों की आत्माओं को भोजन करवाने के लिए हमें परमेश्वर की श्वास से मिले पवित्रशास्त्र से उपदेश करना है, न कि अपने मत या मनुष्यों के तत्वज्ञान से। "प्रभु यूं कहता है" को सदैव ही आधिकारिक और निर्णायक स्वीकार किया जाना चाहिए।

यदि लोग जो उन्हें सिखाया जाता है उसका पालन नहीं करें, तो क्या हो? पवित्रशास्त्र "समझाने" के लिए भी लाभदायक है। "समझाना" ἐλεγμός

(एलेगमोस) से है, जो “अस्वीकृति, भर्त्सना, फटकार की प्रबल अभिव्यक्ति” है।[52] जब लोगों के कार्य उनकी आत्माओं को खतरों में डालते हैं, तो उन्हें फटकार लगाने की आवश्यकता होती है - नम्रता और कोमलता की साथ, प्रेम की आत्मा में होकर (2:24-26; इफि. 4:15)।

इसके बाद, समझाने से संबंधित है “सुधारना।” “सुधारना” संधि-शब्द ἐπανόρθωσις *(एपैनऑर्थोसिस)* से है जो कि ἐπί (*एपि*, “द्वारा”), ἀνά (*एना*, “ऊपर” या “पुनः”), और ὀρθόω (*ऑर्थो*, “सीधा बनाना”[53]) से है। इसका तात्पर्य होता है “सीधी या खड़ी दशा में पुनःस्थापित करना।”[54] यह भाषा “अपने पांवों के लिये सीधे [ὀρθός, *ओर्थोस]* मार्ग बनाओ” (इब्रा. 12:13) के निर्देश के साथ मेल खाती है। लोगों को इतना बताना पर्याप्त नहीं है कि वे गलत हैं (“समझाना”); हमें उन्हें यह भी बताना है कि सही कैसे बनें (“सुधारना”)। फिलिप्स का अनुवाद कहता है कि पवित्रशास्त्र “मनुष्य के जीवन की दिशा को पुनःनिर्देशित करने के लिए है।”

चौथा, “संपूर्ण पवित्रशास्त्र” “धार्मिकता की शिक्षा” के लिये लाभदायक है। जिस शब्द का अनुवाद “शिक्षा” (παιδεία, *पेडिया)* हुआ है उसका मूल παῖς (*पेस*, “बच्चा”) है। *पेडिया* में वह सब कुछ सम्मिलित है जो बच्चों के प्रशिक्षण के लिए चाहिए होता है।[55] उदाहरण के लिए, बच्चे को एक बार कह देना कि क्या करना है पर्याप्त नहीं होता है; क्योंकि बारंबार बताना आवश्यक होता है, इसलिए धैर्य अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त, आज्ञाकारिता को पुरस्कृत, और अनाज्ञाकारिता को दण्डित किया जाना चाहिए। (*पेडिया* में “अनुशासन” का विचार भी सम्मिलित है, और NEB तथा REB में इस शब्द के साथ यह भी अनुवादित हुआ है।) परमेश्वर का वचन सभी आयु के लोगों को शिक्षित करने के कार्य के लिए संसाधन प्रदान करता है। शिक्षा देने का उद्देश्य “धार्मिकता” (δικαιοσύνη, *डाईकाएओसूने)* है, जो इस आयत में सही रीति से जीवन जीने का सुझाव देती है।[56] पौलुस सदा ही व्यावहारिक रहता था। उसकी दो प्रमुख चिंताएँ थीं सही सिद्धान्त और सही जीवन शैली।

इस उपदेश, समझाने, सुधारने, और शिक्षा देने का उद्देश्य क्या था? पौलुस ने आगे कहा, “. . . ताकि परमेश्वर का जन[57] सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए[58]” (3:17)। जब पौलुस ने कहा “हर एक भले काम,” तब उसके मन में दैनिक जीवन के सांसारिक कार्य नहीं थे।[59] वरन, उसके मन में “सही जीवन शैली” था। परमेश्वर ने हमें बाइबल इसलिए नहीं दी कि हम कक्षाओं को पढ़ा सकें और उपदेश प्रचार कर सकें। उसने हमें पवित्रशास्त्र इसलिए नहीं दिए कि हम कक्षा की पुस्तकें और व्याख्याएँ लिख सकें। वरन उसने हमें बाइबल इसलिए दी *ताकि हम और अधिक भले लोग बन सकें* - जिससे हम “सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाएं।”

क्योंकि “सिद्ध” का अर्थ “मात्र संतोषजनक भर” या “पर्याप्त” भी हो सकता है इसलिए यह पौलुस के कथन के बल को उसकी वास्तविकता में नहीं दिखाता है। “सिद्ध” एक विशेषण (ἄρτιος, *अरटिओस)* से है जिसका अभिप्राय होता है

"किसी कार्य के लिए *भली-भांति तैयार किया गया,* संपूर्ण, योग्य, कुशल।"[60] इस शब्द का वर्णन "अपने काम के लिए पूर्णतः सिद्ध एवं उपयुक्त व्यक्ति" है।[61] NKJV में "संपूर्ण" आया है, और ESV में निपुण आया है। CJB वाक्याँश "पूर्णतः तैयार किया गया" में "उपयुक्त" और "तैयार किया गया" विचारों का मेल करता है। NIV भी यही करता है, और "पूर्णतः तैयार किया गया" का प्रयोग करती है।

"तत्पर" ἐξαρτίζω *(एक्सआर्टिज़ो)* से आता है, जो सबल की गई "सिद्ध" *(आर्टिओस)* से संबंधित क्रिया है। प्रभावी रूप में पौलुस कह रहा था, "वचन व्यक्ति को प्रत्येक भले कार्य के लिए *तत्पर* करता है; हाँ, वह उसे पूर्णतः तत्पर करता है।" परमेश्वर हमें कभी कुछ ऐसा करने के लिए नहीं कहता है जिसके लिए उसने हमें तैयार न किया हो।[62]

अनुप्रयोग

प्रभु हमें छुड़ाता है (3:11)

जब हम समस्या में होते हैं, तो यह जानकर शान्ति मिलती है कि परमेश्वर हमारे साथ है (इब्रा. 13:5, 6) और उसने अपने लोगों को छुड़ाने की प्रतिज्ञा की है। हमें यह समझने की जरूरत है कि, कभी-कभी वह हमें परीक्षाओं से बाहर निकालकर छुड़ाता है और कभी-कभी वह हमें सहन करने की शक्ति देकर छुड़ाता है।

परमेश्वर के वचन पर ध्यान केन्द्रित करना (3:14-17)

हम जीवन में कई बातों पर ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं, जैसे धन, सफलता और लोकप्रियता। इस तरह के वर्णन हमें संकीर्ण दृष्टि प्रदान करते हैं, जिससे हम यह देखने में असमर्थ हो जाते हैं कि वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है। हम जीवन में बुरा क्या है पर भी ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं, जो हमें भय और घबराहट से भर सकता है। बुरा क्या है उसे हम पूरी तरह से अनदेखी नहीं कर सकते हैं, परन्तु यह हमारे जीवन का ध्यान नहीं होना चाहिए। यदि हम अच्छी बातों जैसे ईश्वरीय उदाहरणों और परमेश्वर के वचन पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, तो वह अधिक अच्छा होता है।

माता /पिता का कर्तव्य (3:14, 15)

यह उन लोगों के लिये एक पवित्र कर्तव्य बनी हुई है जो माता-पिता हमारे बच्चों को परमेश्वर का वचन सिखाने के लिये हैं। पौलुस ने लिखा, "हे बच्चेवालो, अपने बच्चों को रिस न दिलाओ, परन्तु प्रभु की शिक्षा और चेतावनी देते हुए उनका पालन-पोषण करो" (इफि. 6:4)। नीतिवचन 22:6 अभी भी सच कहता है: "लड़के को उसी मार्ग की शिक्षा दे जिसमें उसको चलना चाहिए, और वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा।" बहुत से लोग सोचते हैं कि उनके बच्चों को सन्डे

बाइबल क्लास में ले जाना उनकी इन ज़िम्मेदारियों को पूरा करता है। हमें अभी भी उन घरों की आवश्यकता है जहाँ वचनों के बारे में बात की जाती है, याद किया जाता है, और उसके अनुसार जीवन व्यतीत किया जाता है। हमें अभी भी उन घरों की जरूरत है जहाँ परिवार एक साथ इकट्ठा होता है जब बाइबल को पढ़ा जाता और उसको जीवन में लागू किया जाता है।

पवित्रशास्त्र से प्रेरणा (3:16)

हमें "प्रेरणा" के बारे में उस तरह से नहीं सोचना चाहिए, जैसे संसार सोचता है, जो कहता है "शेक्सपियर को प्रेरणा मिली थी।" न ही हमें इसे एक प्रक्रिया के रूप में सोचना चाहिए जिसने मनुष्यों को बिना दिमाग वाले रोबोट बना दिया जिन्हें परमेश्वर ने अपना संदेश लिखने का आदेश दिया हो। यहाँ तक कि मूल पाठ की एक सरसरी परीक्षा से पता चलता है कि प्रत्येक पुस्तक को व्यक्तिगत शैली, भावना और अन्तर्दृष्टि द्वारा चित्रित किया जाता है।[63] तो बाइबिल की प्रेरणा क्या है? यह इस बात को सुनिश्चित करने के लिये परमेश्वर द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रक्रिया है कि बाइबिल में सबकुछ ठीक वैसा ही है जैसा वह चाहता था। वॉरेन डब्ल्यू. वाईर्सबे ने इसे इस तरह व्यक्त किया: "बाइबल के लेखकों पर पवित्र आत्मा का अलौकिक प्रभाव, जो गारंटी देता है कि उन्होंने जो लिखा वह सटीक और भरोसेमंद था।"[64] कभी-कभी प्रयोग की जाने वाली शब्दावली "मौखिक प्रेरणा" होती है,[65] जो वर्णन करता है कि दिए हुए पाठ के *शब्द* आत्मा की सिखाई हुई बातें (देखें 1 कुरि. 2:13) हैं।

उपदेश, समझाने, सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा (3:16)

आइए देखते हैं कि किन बातों के लिये "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र" लाभदायक है: *उपदेश* (जो सही है) के लिये, *समझाने* (जो सही नहीं है) के लिये, *सुधारने* (सही रहने के लिये) के लिये और *धार्मिकता की शिक्षा* (कैसे सही होना है) के लिये लाभदायक है।[66] इस सूची को हमारे जीवन में लागू करने के लिये पवित्रशास्त्र के दिए गए किसी भी अनुच्छेद के आधार के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

शिक्षा: इस आयत से परमेश्वर किस बुनियादी सत्य को मुझसे चाहता है कि मैं सीखूँ?
समझाने: मेरे निर्णय, समझ, या व्यवहार में कौन सी त्रुटि है, जो यह आयत समझाती है?
सुधारने: यह आयत किस प्रकार मुझे सुधारती या निर्देशित करती है?
धार्मिकता की शिक्षा: यह आयत मुझे जीवन के लिये कैसे तैयार करती है?[67]

समाप्ति नोट्स

[1]यूनानी लेख में, बल "तू" पर है। [2]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *गार्ड द गॉस्पल: द मेसेज ऑफ 2 तीमोथी*, द बाइबल स्पीक्स टुडे (डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय: इन्टरवर्सिटी प्रैस, 1973), 92. [3]1 तीमुथियुस 4:6, में *पैराकोलोउथियो* का प्रयोग "उस अच्छे उपदेश की बातों को *मानता आया* है" के लिए किया गया है (बल दिया गया है)। [4]जॉर्ज डब्ल्यू, नाईट III, *द पास्टोरल एपिसल्स*, द न्यू इंटरनैशनल ग्रीक टेस्टामेंट कॉमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1992), 438-39. [5]वॉल्टर एल. लेफेल्ड, *1 & 2 तीमोथी, टाईटस*, द NIV एप्लिकेशन कॉमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ॉनडरवैन, 1999), 278. [6]यूनानी लेख का शब्दार्थ है "मेरी शिक्षा में।" सूची के सभी प्रविष्टियों के पहले एक निश्चित शब्द वर्ग है। शेष का अनुवाद "*मेरा* व्यवहार, *मेरा* उद्देश्य, *मेरा* विश्वास . . ." किया जा सकता है (देखें NRSV; NJB; ESV)। [7]"अच्छे उपदेश" पर 1 तीमुथियुस 4:6 में बल दिया गया है। [8]वॉल्टर बाऊर, *ए ग्रीक-इंगलिश लेक्सिकॉन ऑफ द न्यू टेस्टामेंट एण्ड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिट्रेचर*, तीसरा संस्करण, रिवाइज्ड एंड एडिटेड फ्रेड्रिक विलियम डेंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 2000), 869. [9]*मकरोथूमिया* के एक स्वरूप का अनुवाद 1 तीमुथियुस 1:16 में "सहनशीलता" हुआ है। [10]विलियम बार्कले, *द लेटर्स टू तीमोथी, टाईटस, एण्ड फिलेमोन*, रिवाइज्ड एडिशन, द डेली स्टडी बाइबल (फिलेडेल्फिया: वेस्टमिनिस्टर प्रैस, 1975), 197.

[11]क्रिया *ह्यूपोमोने* का अनुवाद 2:12 में "सहते" हुआ है। [12]पौलुस ने जब अपने आप को 1 तीमुथियुस 1:13 में "सतानेवाला" (διώκτης, *डायोक्तेस)* कहा तो इससे संबंधित शब्द का प्रयोग किया। [13]यह शब्द उसे शब्द परिवार πάθος *(पैथोस)* से है, जिसका अर्थ होता है "दुःख उठाना।" [14]बाऊर, 907. [15]*रहूओमाई* का प्रयोग फिर से 2 तीमुथियुस 4:18 में हुआ है, जहाँ इसी प्रकार से इसे "सुरक्षित" किया गया है। [16]डब्ल्यू. ई. वाइन, मेरिल एफ. अंगर, एण्ड विलियम व्हाईट, जूनियर, *वाईन्स कंप्लीट एक्सपोज़िट्री डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एण्ड न्यू टेस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 468; बाऊर, 254. *डायोको* को सकारात्मक रीति से भी प्रयोग कर सकते हैं (देखें 1 तीमु. 6:11; 2 तीमु. 2:22), यहाँ यह प्रयोग नहीं है। [17]आर्चीबाल्ड थोमस रॉबर्टसन, *वर्ड पिक्चर्स इन द न्यू टेस्टामेंट,* वोल. 4, *द एपिसल्स ऑफ पौल* (न्यू यॉर्क: हार्पर & ब्रदर्स, 1931), 626. [18]"व्यक्ति" जातिगत शब्द ἄνθρωπος *(एन्थ्रोपोस)* से है, इसलिए यह आयत पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए प्रयोग की जा सकती है। [19]बाऊर, 851. [20]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 321.

[21]बाऊर, 204. [22]*प्रोकॉपटो* 1 तीमुथियुस 2:16 में "बढ़ते" किया गया है। [23]यूनानी लेख में शब्दार्थ है "बुरे से और बुरे होते जाएँगे।" "बद से बदतर" इस अभिव्यक्ति का वर्तमान स्वरूप है। [24]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 151; बाऊर, 821-22. [25]*मनथनो* के एक क्रिया स्वरूप का अनुवाद टाईटस 3:14में "सीखें" है। [26]1 तीमुथियुस 2:15, पौलुस ने वाक्याँश "विश्वास, प्रेम और पवित्रता में स्थिर [*मेनो* से] रहे।" [27]बाऊर, 821. [28]स्टॉट, 94. [29]ब्रूस एम. मेट्ज़गर, *ए टेक्सच्युअल कॉमेंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टेस्टामेंट,* दूसरा संस्करण (स्टुटगार्ट: जर्मन बाइबल सोसाईटी, 1994), 580. [30]*द ग्रीक न्यू टेस्टामेंट,* एड. कुर्ट एलैंड, मैथ्यू ब्लैक, ब्रूस एम. मेट्ज़गर, एण्ड एलैन विकग्रैन (स्टुटगार्ट: यूनाइटेड बाइबल सोसाइटीस, 1966).

[31]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 543, 365. [32]बाऊर, 205. [33]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 48; बाऊर, 183-84. [34]बार्कले, 199. [35]मिश्नाह *एबोथ* 5.21. [36]1:5 पर टिप्पणियाँ देखिए। [37]क्या उनके पास पुराने नियम की प्रतियां थीं, या वे आराधनालय (सेनागोग) में पढ़े जाने वाले खण्डों की स्मृतियों को साझा करते थे? हम नहीं जानते हैं। [38]क्रिया *सोफिज़ो* उसी शब्द मूल σοφία (*सोफिया*, "बुद्धिमता") से है, वह गुण जिसपर पौलुस ने कुलुस्सियों 1:9, 28; 3:16; 4:5 में बल दिया। [39]लेफेल्ड, 279. [40]बाऊर, 206.

[41]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 21; बाऊर, 782. [42]विलियम हेन्ड्रिक्सन, *एक्सपोजिशन ऑफ द पास्टोरल एपिस्लस*, न्यू टेस्टामेंट कॉमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1965),

301, एन. 161. [43]"प्रेरणा से" का शब्दार्थ है "श्वास अन्दर खींचना, श्वास लेना।" [44]डेल हार्टमैन, "प्रोफेसी ऑफ स्क्रिप्चर," ईस्टसाईड चर्च ऑफ क्राईस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लोहोमा में प्रचार किया गया सन्देश। [45]जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स, *लेटर्स टू तीमोथी*, द लिविंग वर्ड (ऑस्टिन, टेक्सस: आर. बी. स्वीट को., 1964), 91-93. [46]उपरोक्त, 91 (बल दिया गया है)। [47]गॉर्डन डी. फी, *1 एण्ड 2 तीमोथी, टाईटस*, ए गुड न्यूज़ कॉमेंट्री (सैन फ्रैंसिस्को: हार्पर & रो, 1984), 229. [48]देखें 1 तीमु. 5:18. [49]*ओफेलिमोस* के एक स्वरूप का का अनुवाद तीतुस 3:8 में "लाभ" हुआ है। [50]देखें 1 तीमु. 6:20; 2 तीमु. 2:14, 16; तीतुस 3:9.

[51]"उपदेश" के लिए यह संज्ञा स्वरूप 3:10 में भी आता है। [52]बाऊर, 314. *एलिग्मोस* के इस क्रिया स्वरूप का अनुवाद 1 तीमुथियुस 5:20 में "समझा" और तीतुस 2:15 में "सिखाता" हुआ है। [53]एक "*ऑर्थो*डॉनटिस्ट" एक ऐसा दंतचिकित्सक है जिसकी विशेषता दांतों को सीधा करना है। [54]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 130. 2:15 में प्रयुक्त एक ऐसे ही शब्द (ὀρθοτομέω, *ऑर्थोटोमियो)* का अर्थ है "सीधा काटना।" [55]παιδεύω (*पाईडेयुओ*) के क्रिया स्वरूप, 1 तीमुथियुस 1:20 में ("सीखें"); 2 तीमुथियुस 2:25 में ("समझाए"); और तीतुस 2:12 में ("चेतावनी") में भी आता है। [56]*डाईकाएओसूने* का 1 तीमुथियुस 6:11; 2 तीमुथियुस 2:22; और तीतुस 3:5 में अनुवाद "धर्म" भी हुआ है। [57]"जन" जातिगत ἄνθρωπος (*एन्थ्रोपोस*) से है, जिसमें परमेश्वर के पुरुष और महिला जन सम्मिलित हैं। वाक्याँश "परमेश्वर के जन" 1 तीमुथियुस 6:11 में भी आता है। [58]"भले काम" या "कर्म" पर तीतुस 2 और 3 में भी बल दिया गया है। [59]इसका यह अर्थ नहीं है कि बाइबल में सांसारिक कार्यों को करने के विषय कुछ नहीं कहा गया है। हमें सदा अपना सर्वोत्तम करना है, उस सेवा को "मनुष्यों की नहीं, परन्तु प्रभु की जानकर" (इफि. 6:7) करना है। [60]बाऊर, 136 (बल दिया गया है)।.

[61]डॉन्लड गथरी, *द पास्टोरल एपिसिल्स*, रिवाइज्ड एडिशन, द टिन्डेल न्यू टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीस (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1990), 176. [62]डेल हार्टमैन, ईस्टसाईड चर्च ऑफ क्राईस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लोहोमा में, जुलाई 7, 2014 में प्रचार किया गया सन्देश। [63]लूका ने यह भी कहा कि अपने सुसमाचार के इस वर्णन को लिखने से पहले उसने अपना व्यक्तिगत शोध किया (लूका 1:3)। [64]वॉरेन डब्ल्यू. वाईर्सबे, *द बाइबल एक्सपोसिशन कॉमेन्टरी: न्यू टेस्टामेन्ट*, वॉल्यूम 2 (व्हीटन, इल्लिनोय: विक्टर बुक्स, 1989), 252. [65]बीते दिनों में प्रयोग किया जाने वाला वाक्यांश "सम्पूर्ण [पूर्ण] प्रेरणा" था। [66]वियर्सबी, 253 से लिया गया है। [67]ब्रूस बी. बार्टन, डेविड आर. वीरमैन, एण्ड नील विल्सन, *1 तिमोथी, 2 तिमोथी, टाइटस*, लाइफ एप्लीकेशन बाइबल कॉमेन्टरी (व्हीटन, इल्लिनोय: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1993), 218 से लिया गया है।